रिकॉर्डः— ओम नमो शिवाय..... ॐ पिताश्री 4/11/1965
ओम् शान्ति। भक्तिमार्ग में महिमा करते हैं शिवाय नमः। ऊँच ते ऊँच है शिव। उनको ही शिव परमात्मा नमः कहा जाता है। ब्रह्मा देवता नमः कहा जाता है। विष्णु को भी देवता नमः कहा जाता है और शिव परमात्मा नमः कहा जाता है। फर्क है ना। परमात्मा एक है ऊँच ते ऊँच। उनकी महिमा भी ऊँची है। इस समय ऊँच ते ऊँच कर्तव्य करते हैं। उनका धाम भी ऊँच ते ऊँच है। नाम भी ऊँच है। और किसको परमात्मा नहीं कहते। परमात्मा के लिए ही गाते हैं हे पतित—पावन। आते भी हैं पतित दुनिया और पतित शरीर में। पतित शरीर का नाम है प्रजापिता ब्रह्मा। इनमें प्रवेश कर कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त वाले साधारण मनुष्य में प्रवेश करता हूँ। पतित शरीर में आते हैं। सूक्ष्मवतनवासी पावन ब्रह्मा में नहीं आते हैं। खुद कहते हैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में आता हूँ। बहुत जन्म लेते ही हैं ल०ना०। उनके बहुत जन्मों के अन्त का जन्म साधारण, पतित है। ऐसे तो कहते नहीं हैं कि मैं पावन शरीर में प्रवेश करता हूँ। भगवानुवाच्य मैं आता ही हूँ साधारण तन में। अब भगवान ज़रूर आत्मा ही है, जो आत्माओं को इस साधारण तन द्वारा बैठ समझाते हैं कि मैं प०पि०प० हूँ। मैं कृष्ण की आत्मा नहीं हूँ। ना ब्र०वि०शं० की आत्मा हूँ। मैं प०पि०प० हूँ, जिसको शिव परमात्मा नमः कहते हैं। मैं आया हूँ इसमें। मैं सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा देवता में प्रवेश नहीं करता हूँ। मुझे तो यहाँ पतित को पावन बनाना है। मेरे द्वारा ही वो सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा पावन बना है। इसलिए इनको सूक्ष्म में दिखाया है। कितना अच्छी रीत समझाते हैं; परन्तु मनुष्य सुनी—सुनाई उलटी बातों पर चलते रहते। वो सब है आसुरी बुद्धि। सुनते भी आसुरी बुद्धि से हैं। ईश्वरीय बुद्धि से सुने तो संशय सब मिट जाए। त्रिमूर्ति दिखाने बिगर समझाना भी मुश्किल है। इन्होंने त्रिमूर्ति ब्रह्मा नाम रख दिया है; क्योंकि प०पि०प० ब्रह्मा द्वारा नई रचना रचते हैं। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। तो रचना हुई ना। तो ज़रूर प्रजापिता ब्रह्मा ही होगा। तुम बच्चे अब सन्मुख बैठे हो। ब्रह्मा लगापत(प्रजापति) सब पतित हो। अब पावन बन रहे हो। जितना जो बनेगा वो सर्विस से दिखाई पड़ेगा। यह अच्छा पुरुषार्थी है। इ(नमें) .... आसुरी गुण हैं। देवताओं में तो दैवीगुण थे ना। हरेक अपने आसुरी गुण और उन्हों के दैवीगुण (वर्णन) करते हैं। अभी आसुरी गुणों को छोड़ना है, नहीं तो ऊँच पद पा ना सकेंगे। बाप समझाते रहते हैं— बच्चे, दैवीगुण धारण करो। खान—पान, चलन, हर बात में फज़ीलियत चाहिए। पतित मनुष्यों को बद—फज़ीलियत कहेंगे। देवताएँ फज़ीलियत वाले हैं तब तो उन्हों का गायन होता है। तो हरेक को पुरुषार्थ करना है। जो करेगा सो पावेगा। तुम अब ज्ञान मार्ग में हो। भगवान आए कर सहज राजयोग और ज्ञान सिखलाते हैं। बाकी यह शास्त्र आदि जो बने हैं वो सब हैं भक्तिमार्ग के। भक्ति से दुर्गति होनी ही है। सतयुग में यह भक्ति होती नहीं। अनेक प्रकार की भक्ति करते हैं। कोई शास्त्र पढ़ते, कोई क्या करते, दुर्गति को पाते रहते हैं। जो जास्ती दुर्गति को पाते हैं उनको ही भगवान आय फिर सद्गति में ले जाते हैं। तुम मनुष्यों को कितना समझाते हो कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है फिर भी मानते नहीं। कितना ज़िद करते हैं। समझाते हैं प०पि०प० तो भक्तों का रक्षक है ना। सर्वव्यापी का कोई अर्थ ही नहीं निकलता। कहते हैं, व्यास की गीता में लिखा है। बाप कहते हैं उन्होंने जो कुछ लिखा है वह तो है ही भक्तिमार्ग के लिए। भक्तिमार्ग के बाद भगवान को आना है। अब भक्ति कहाँ तक करनी है, वेद—शास्त्र आदि कब से रचे जाते हैं, व्यास कब आया, कब लिखा, किसको भी पता नहीं है। समझते हैं यह शास्त्र तो परंपरा से चले आते हैं; परन्तु ऐसे है नहीं। व्यास कहा जाता है वाचक को, जो मुरली चलाते हैं। ज्ञान सागर तो एक ही बाप है। तुम बच्चों को ज्ञान सुनाते हैं व्यास और सुखदेव। सुख देने वाला भी एक ही बाप है। तो (य)हाँ की बात ही न्यारी है। भक्तिमार्ग में इन शास्त्रों आदि का कितना मान है। बाप कहते हैं यह गुरुलोग सब शास्त्रों आदि की ईविल बातें सुनाते हैं, वो ना सुनो। सबसे ईविल बात है ईश्वर (अधूरी मुरली)